(प्रश्न संख्या(2)→ घरदेखिया कथा संग्रह मे निहीत मानवीय संवेदनाक विवेचना करु।

(उत्तर)→ घर देखिया कथा संग्रह सुभाष चंद्र यादवक प्रसिद्ध कृति अछि। सुभाष चन्द्र यादव अपन जीवनक भोगल-देखल सत्यकेँ अपन कथाक विषयवस्तु बनाकेँ पाठक केँ ओहि सँ जोड़ैत छथिन। अपन कथा मे अपन परिवेशक अनछुअल पहलु केँ चर्चा कँ कथा मे मर्मस्पर्शी भाव उत्पन्न करैत अछि।

घर देखिया कथा संग्रह मे निहीत मानवीय संवेदनाक सँ परिचयक लेल घर देखिया कथाक विभिन्न विषय बिन्दु सँ परिचय अरबी बुझाइत अछि जे ई प्रकारसँ अछि -

अभाव

पूरा एक साल भ गेल छैक। समयक संतेक दूरी पर सोचैत ओकरा आलस आबैत छैक। एहने मौसम रहैत छलैक, दिन सामान्य कनि-कनि बितैत आइत छलैक। ओकरा केवल ई तरहक अनुभूति होइत छलैक। पढ़िया कहलापर एक तरहक उदासी आ प्रत्येक राति ई सोचब जे एकटा खाली दिन फेर गुजरि

गेल छैक।

ओ कैक बेर सोचिक' रहि जाइत अछि। हिम्मति नहि होइत छैक। सुस्त भ' जाइत अछि। कोनो दोसर दिन पर टारि सोचबाक दिशा बदलि दैत छैक। कतेक दिनसँ एहना भ' रहल छैक। ओकरा मोन नहि पड़ैत छैक, केहन मनः स्थितिक रहैत छलैक जखन ओ लिखि लैत छल। ओहन मनः स्थितिक लगातार बरख भरि सँ अभाव ओकरा दुःखप्रद बुझाइत छैक। ओ सोचैत अछि, लिखबा लेल पछिला सालक मनः स्थिति कैं फेरसँ जियाब' पड़तैक।

## आँचर

आइ फेर नहि टुबैर भेलैक।
'आसिन मास जँ बहय ईसान
घर-घर कानय गाय-किसान'
क्यो कहैत छैक।

बाप रे इसबाल सतरिया। नहि मानि, मेघ मे कतेक भूर भ' गेल छैक। आठ दिनसँ बदरी लगने छैक। तुलसीक चौरा। फेर ओकर ध्यान चल गेलैक। लगैह जेना अँता जकाँ क्यो कूटि दैने होइक। पाँको माँटि मे बुनका-बुनका। घोर। फेर ओएह मोन पड़ि गेल। ओकर मुह घोकनि गेलैक।

उत्तर मेघ

खूब जोरगर पुरबामे मेघ उड़िया गेलैक। ओ सभ फेर भान्त भ' क' चल' लागल। अगिला स्टेशने दलान लग मौजी बैसि गेलैक। ओ चलबामे छरपाइत रहैक। तीन दिन पहिने चोर के हारबामे ओकर टाङ्क हड्डी उतरि गेल छलैक। भीबू, काम्, देबू आ विजेन्द्र ठाढ़ भ' गेल।

तीनटा मौगी अबैत छलैक, ओकरा पाँयमे पकड़ि उठाब' लगलैक। ओ आड़ुरसँ पररी पकड़ि लेलक। ओकरा चेहरा पर बहुत रास नोहारक चेन्ह छलैक।

अतः सुभाष चन्द्र यादव द्वारा 'घर देखिया' शीर्षक सँ लिखल गेल कथाकेँ अध्ययन सँ ई स्पष्ट होइत य जे ई कथा में लेखक अपन सामाजिक जीवन केँ घटल घटना के चित्रण कयने के प्रयास कयने छथि। हिनक कथा मे काल्पनिक कहानि केँ जगह नई औ केँ वास्तविक घटना केँ जगह बेसी अछि। इहे कारण ई कथा मर्मस्पर्शी सेहो अछि। ई मे आत्मीय भाव के पूर्ण समावेश अछि। याहि कारणे ई कथा मानवीय संवेदना उत्पन्न करैत अछि।

x — x — x — x — x — x — x